2 अप्रैल 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 1 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अप्रैल (प्रथम), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

Online - घर बैठे लाभ लेवें
अर्हं पाठशाला का भव्य शुभारंभ

जयपुर : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल मुक्त विद्यापीठ द्वारा संचालित अर्हं पाठशाला का भव्य शुभारम्भ दिनांक 11 मार्च को किया गया। इस पाठशाला के अन्तर्गत ऑनलाईन वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग (जूम एप) के द्वारा आधुनिक तरीके से जैनधर्म को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया जायेगा।

इस अवसर पर अन्तरराष्ट्रीय तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई आदि महानुभाव उपस्थित थे।

अर्हं पाठशाला की संपूर्ण गतिविधि की जानकारी देते हुए पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि यह उपक्रम नये तरीके से जन-जन में जैनधर्म व तत्त्वज्ञान को पहुंचाने का कार्य करेगा। डॉ. संजीवजी ने कहा कि पाठशाला का मूल उद्देश्य विश्व के कोने-कोने में तत्त्वज्ञान को पहुंचाना है, ताकि कोई भी इस तत्त्वज्ञान से अछूता न रहे। डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमारे दो ही उद्देश्य होने चाहिये - आत्मानुभूति और तत्त्वप्रचार; यह पाठशाला इसी उद्देश्य को पूरा करने में सहयोगी होगी।

अन्त में अर्पितजी शास्त्री ने फार्म भरने की प्रक्रिया बताई। कार्यक्रम का मंगलाचरण कु. प्रतीति पाटील एवं संचालन जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया। **विशेष जानकारी हेतु संपर्क करें :-** अर्हं पाठशाला- मोबाइल - 8058890377

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

1 से 5 मई	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
19 मई से 5 जून	सूरत	प्रशिक्षण शिविर,
7 जून से 6 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
2 से 11 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर

सिद्धचक्र महामंडल विधान सानन्द संपन्न

दिल्ली : यहाँ श्री सिद्धशिला परिसर, विश्वास नगर में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 13 से 21 मार्च तक जैन युवा फैडरेशन एवं ज्ञान चेतना ट्रस्ट दिलशाद गार्डन द्वारा श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा तीनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित प्रद्युम्नजी जैन मुजफ्फरनगर, डॉ. मनीषजी शास्त्री रहली द्वारा प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला। विशेष कार्यक्रमों के अन्तर्गत आत्मार्थी विदुषी कन्याओं द्वारा 'निमित्त उपादान' विषय पर सुन्दर नाटिका का मंचन किया गया। दिनांक 14 मार्च को 'श्रीपाल मैनासुन्दरी' नाटक का मंचन बिजनौर द्वारा हुआ, दिनांक 16 मार्च को 'जैनधर्म और हमारा वर्तमान जीवन' विषय पर उपस्थित विद्वानों ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया, दिनांक 17 मार्च को दोपहर में जैन जिज्ञासा व प्रश्नोत्तर कार्यक्रम में डॉ. संजीवजी गोधा व श्री नीरजजी जैन द्वारा शंका-समाधान किया गया एवं दिनांक 19 मार्च को रात्रि में पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा 'विकल्पों का मायाजाल' विषय पर 2 घंटे का विशेष व्याख्यान हुआ।

इस विधान में श्री विमल जैन कुसुमलता जैन, श्री अजितप्रसाद वैभव जैन, श्री वेदपाल जैन, श्रीमती निर्मला जैन, श्री नीरज जैन, श्रीमती अर्चना जैन, श्री कैलाशचंद बोहरा, श्रीमती निर्मला जैन नीरज जैन जयपुर, श्री नरेन्द्र जैन अलका जैन, श्री सुरेन्द्रकुमार जैन 'मिंटू', श्रीमती रजनी जैन, श्री अतुल जैन 'अन्तु', श्रीमती तनमन जैन, श्रीमती कुमकुम जैन पारुल जैन, श्रीमती मूंगादेवी जैन, श्री वज्रसेन जैन आयोजन के मुख्य पात्र एवं सहयोगी रहे।

कार्यक्रम में लगभग 500-600 साधर्मियों ने लाभ लिया। इस अवसर पर पण्डित अशोकजी गोयल, पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर, पण्डित ऋषभजी, पण्डित अमनजी जैन शंकर नगर, पण्डित सुमितजी शास्त्री बड़ौत, पण्डित संजयजी जयपुर आदि अनेक स्थानीय विद्वान भी उपस्थित रहे।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित संजयजी मंगलायतन द्वारा पण्डित अभिनवजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित आदित्यजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित मयंकजी शास्त्री अमरमऊ, पण्डित ऋषभजी शास्त्री भिण्ड के सहयोग से संपन्न हुये। विधान के समापन पर महोत्सव समिति के महामंत्री श्री नीरज जैन द्वारा सभी साधर्मियों का धन्यवाद व आभार प्रकट किया गया।

ज्ञातव्य है कि दिनांक 14 मार्च को डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का एक विशेष प्रवचन लाल बहादुर शास्त्री विश्वविद्यालय में भी हुआ। ●

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये?

26

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

सल्लेखना के आगम में कई प्रकार से भेद किए हैं; जिनका संक्षिप्त विवरण इसप्रकार है –

नित्यमरण सल्लेखना – प्रतिसमय होनेवाले आयुकर्म के क्षय के साथ द्रव्य सल्लेखनापूर्वक विकारी परिणाम विहीन शुद्ध परिणमन नित्यमरण सल्लेखना है।

तद्भवमरण सल्लेखना – भुज्यमान (वर्तमान) आयु के अन्त में शरीर और आहार आदि के प्रति निर्ममत्व होकर साम्यभाव से शरीर त्यागना तद्भवमरण सल्लेखना है।

काय सल्लेखना – काय से ममत्व कम करते हुए काय को कृश करना; उसे सहनशील बनाना काय सल्लेखना है। एतदर्थ कभी उपवास, कभी एकाशन, कभी नीरस आहार कभी अल्पाहार (उनोदर) – इसतरह क्रम-क्रम से शक्तिप्रमाण आहार को कम करते हुए क्रमशः दूध, छाछ गर्मपानी से शेष जीवन का निर्वाह करते मरण के निकट आने पर पानी का भी त्याग करके देह का त्याग करना काय सल्लेखना है।

भक्त प्रत्याख्यान सल्लेखना – इसमें भी उक्त प्रकार से ही भोजन का त्याग होता है। इसका उत्कृष्ट काल १२ वर्ष व जघन्यकाल अन्तर्मुहूर्त है।

कषाय सल्लेखना – तत्त्वज्ञान के बल से कषायें कृश करना।

आगम में मरण या समाधि मरण के उल्लेख अनेक अपेक्षाओं से हुए हैं – उनमें निम्नांकित पाँच प्रकार के मरण की भी एक अपेक्षा है।

१. पण्डित-पण्डित मरण – केवली भगवान के देह विसर्जन को पण्डित-पण्डित मरण कहते हैं। इस मरण के बाद जीव पुनः जन्म धारण नहीं करता।

२. पण्डित मरण – यह मरण छठवें गुणस्थानवर्ती मुनिराजों के होता है। एकबार ऐसा मरण होने पर दो-तीन भव में ही मुक्ति हो जाती है।

३. बाल पण्डित मरण – यह मरण देशसंयमी के होता है। इस मरण के होने पर सोलहवें स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है।

४. बाल मरण – यह मरण चतुर्थगुणस्थानवर्ती अविरत सम्यग्दृष्टि के होता है। इस मरण से प्रायः स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

५. बाल-बाल मरण – यह मरण मिथ्यादृष्टि के होता है। यह मरण करने वाले अपनी-अपनी लेश्या व कषाय के अनुसार चारों गतियों के पात्र होते हैं। पाँचवें बाल-बाल मरण को छोड़कर उक्त चारों ही मरण समाधिपूर्वक ही होते हैं, परन्तु स्वरूप की स्थिरता और परिणामों की विशुद्धता अपनी-अपनी योग्यतानुसार होती है।

समाधिधारक यह विचार करता है कि ''जो दुःख मुझे अभी है, इससे भी अनंतगुणे दुःख मैंने इस जगत में अनन्तबार भोगें हैं, फिर भी आत्मा का कुछ भी नहीं बिगड़ा। अतः इस थोड़े से दुःख से क्या घबराना? यदि पीड़ा चिन्तन आर्तध्यान होगा तो फिर नये दुःख के बीज पड़ जायेंगे। अतः इस पीड़ा पर से अपना उपयोग हटाकर मैं अपने उपयोग को पीड़ा से हटाता हूँ। इससे पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा तो होगी ही, नवीन कर्मों का बंध भी नहीं होगा। जो असाता कर्म उदय में दुःख आया है, उसे सहना तो पड़ेगा ही, यदि समतापूर्वक सह लेंगे और तत्त्वज्ञान के बल पर संक्लेश परिणामों से बचे रहेंगे तथा आत्मा की आराधना में लगे रहेंगे तो दुःख के कारणभूत सभी संचित कर्म क्षीण हो जायेंगे।

हम चाहे निर्भय रहें या भयभीत, रोगों का उपचार करें या न करें, जो प्रबलकर्म उदय में आयेंगे, वे तो फल देंगे ही। उपचार भी कर्म के मंदोदय में ही अपना असर दिखा सकेगा। जबतक असाता का उदय रहता है, तबतक औषधि निमित्त रूप से भी कार्यकारी नहीं होती। अन्यथा बड़े-बड़े वैद्य डाक्टर, राजा-महाराजा तो कभी बीमार ही नहीं पड़ते, क्योंकि उनके पास साधनों की क्या कमी? अतः स्पष्ट है कि होनहार के आगे किसी का वश नहीं चलता – ऐसा मानकर आये दुःख को समताभाव से सहते हुए सबके ज्ञाता-दृष्टा बनने का प्रयास करना ही योग्य है। ऐसा करने से ही मैं अपने मरण को समाधिमरण में परिणत कर सकता हूँ।

आचार्य कहते हैं कि यदि असह्य वेदना हो रही हो और उपयोग आत्मध्यान में न लगता हो, मरण समय हो तो ऐसा विचार करें कि ''कोई कितने ही प्रयत्न क्यों न करे, पर होनहार को कोई टाल नहीं सकता। जो सुख-दुःख, जीवन-मरण जिस समय होना है, वह तो होकर ही रहता है।

कार्तिकेयानुप्रेक्षा में स्पष्ट लिखा है कि ''साधारण मनुष्य तो क्या, असीम शक्ति सम्पन्न इन्द्र व अनन्त बल के धनी जिनेन्द्र भी स्व-समय में होनेवाली सुख-दुःख व जीवन-मरण पर्यायों को नहीं पलट सकते।''

ऐसे विचारों से सहज समता आती है और राग-द्वेष कम होकर मरण समाधि मरण में परिणत हो जाता है।

सभी भव्य जीव ऐसे मंगलमय समाधिमरण को धारण कर अपने जीवन में की गई आत्मा की आराधना तथा धर्म की साधना को सफल करते हुए सुगति प्राप्त कर सकते हैं।

उपसंहार

सारांश रूप में कहें तो आधि, व्याधि और उपाधि से रहित आत्मा के निर्मल परिणामों का नाम समाधि है। आधि अर्थात् मानसिक चिन्ता, व्याधि अर्थात् शारीरिक रोग और उपाधि अर्थात् पर के कर्तृत्व का बोझ – समाधि इन तीनों से रहित आत्मा की वह निर्मल परिणति है, जिसमें न कोई चिन्ता है, न रोग है और न पर के कर्तृत्व का भार ही है। एकदम निराकुल, परम शांत, अत्यन्त निर्भय और निशंक भाव से जीवन जीने की कला ही समाधि है। यह समाधि संवेग के बिना संभव नहीं और संवेग अर्थात् संसार से उदासी सम्यग्दर्शन के बिना संभव नहीं। सम्यग्दर्शन के लिए तत्त्वाभ्यास और भेदविज्ञान अनिवार्य है।

जिसे समाधि द्वारा सुखद जीवन जीना आता है, वही व्यक्ति सल्लेखना द्वारा मृत्यु को महोत्सव बना सकता है, वही शान्तिपूर्वक मरण का वरण कर सकता है।

समाधि और सल्लेखना को और भी सरल शब्दों में परिभाषित

करें तो हम यह कह सकते हैं कि ''समाधि समता भाव से सुख-शान्तिपूर्वक जीवन जीने की कला है और सल्लेखना मृत्यु को महोत्सव बनाने का क्रान्तिकारी कदम है, मानव जीवन को सार्थक और सफल करने का एक अनोखा अभियान है।'' इति शुभं। **(क्रमशः)**

अष्टाह्निका पर्व सानन्द संपन्न

(1) देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट में श्री पंचमेरु नंदीश्वर, 47 शक्ति महामंडल विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला आयोजित हुई।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, ब्र. हेमचंदजी 'हेम', पण्डित चेतनभाई राजकोट, पण्डित बाबूभाई मेहता आदि विद्वानों द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित दीपकजी धवल, पण्डित उर्विशजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुये।

(2) अजमेर (राज.) : यहाँ वैशाली नगर स्थित ऋषभायतन अध्यात्मधाम में श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा पर्व के अवसर पर सैंतालीस शक्ति विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। आपके प्रवचनों से अनेक जैन-अजैन परिवार बहुत प्रभावित हुये।

दिनांक 17 मार्च को श्री कमलचंदजी बोहरा द्वारा ग्रंथाधिराज समयसार की मूल प्राकृत गाथाएं एवं तत्त्वार्थसूत्र के मूल सूत्र ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण करवाकर शुद्ध विधि व मंत्रोच्चारपूर्वक विराजमान किये गये। इस अवसर पर अजमेर के अतिरिक्त जयपुर, ब्यावर, रूपनगढ, पीसांगन, दूदू व अमेरिका से अनेक साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल द्वारा कराये गये।

(3) गढाकोटा-सागर (म.प्र..) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' द्वारा प्रातः समयसार कलश के अजीव अधिकार पर, दोपहर में द्रव्यसंग्रह एवं सायंकाल प्रवचनसार के आधार से 47 नय पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त एक-एक प्रवचन गौरझामर व रहली में भी हुआ।

(4) छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर गोलगंज स्थित श्री आदिनाथ जिनालय में मुमुक्षु मण्डल एवं जैन युवा फैडरेशन द्वारा श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. महेन्द्रजी शास्त्री अमायन, पण्डित अशोकजी वैभव, पण्डित चिरंजनजी जैन, पण्डित विमलकुमारजी जैन एवं ब्र. आरती बहन द्वारा प्रवचनों व गोष्ठी का लाभ मिला।

(5) मुम्बई : यहाँ पर्व के अवसर पर विभिन्न उपनगरों में विद्वानों द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला, जिसके अन्तर्गत **सीमंधर जिनालय** में पण्डित अनुभवजी जैन करेली, **दादर (वेस्ट)** में कु. जिनल बेन देवलाली, **मलाड (ईस्ट)** में पण्डित सौरभजी जैन वसई, **घाटकोपर** में डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री, **वसई** में पण्डित अभिषेकजी शास्त्री गजपंथा, **बोरीवली (वेस्ट)** में पण्डित अश्विनभाई शाह मलाड, **मलाड (वेस्ट)** में पण्डित विपिनजी जैन, **दहीसर** में पण्डित जिनेशभाई शेठ व पण्डित राकेशभाई शेठ बोरीवली, **भायंदर** में पण्डित सुबोधजी जैन सिवनी द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर, पंचबालयति विधान एवं दीक्षांत समारोह सानन्द संपन्न

धुवधाम-बांसवाड़ा (राज.) : यहाँ दिनांक 1 से 3 मार्च तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर, पंचबालयति विधान एवं 11वाँ दीक्षांत समारोह सानन्द संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई अहमदाबाद, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर द्वारा प्रवचनों का तथा ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली द्वारा छहढाला की कक्षा का लाभ मिला।

इस अवसर पर शास्त्री तृतीयवर्ष के छात्रों (11वाँ बैच) का दीक्षांत समारोह भी आयोजित किया गया, जिसमें उनके 40 अभिभावकों की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही। तृतीय वर्ष के सभी छात्रों ने अपने उद्गार व्यक्त किये, जिसमें उन्होंने 5 वर्ष के अध्ययनकाल के अनुभवों की चर्चा की। साथ ही भविष्य की तत्त्वप्रचार की योजनाओं पर विचार व्यक्त किये।

अंत में ब्र.जतीशचंदजी द्वारा उद्बोधन के पश्चात् सभी 14 विद्यार्थियों को 'न्याय शास्त्री' की उपाधि से अलंकृत किया गया तथा ज्ञायक परिवार द्वारा अनेक उपहार भेंटस्वरूप दिये गये।

संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन संस्था के प्राचार्य डॉ. प्रवीणकुमारजी शास्त्री ने किया एवं सभी आगन्तुक अतिथियों का परिचय व उनका आभार प्रदर्शन श्री महिपालजी ज्ञायक ने व्यक्त किया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में श्री अशोकजी जैन उज्जैन व श्री सम्मेदजी जैन ने संपन्न कराये।

विद्वानों की आवश्यकता

श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट भिण्ड तथा अ.भा.जैन युवा फैडरेशन देवनगर भिण्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में 15वाँ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन दिनांक 7 से 16 जून तक किया जा रहा है। शिविर में मध्यप्रदेश व उत्तर प्रदेश के 101 स्थानों पर शिविर लगाने का लक्ष्य है, अतः लगभग 175 विद्वानों की आवश्यकता है। जो महानुभाव बालबोध, वीतराग-विज्ञान पाठमाला, छहढाला आदि पढा सकते हैं, वे **संपर्क करें** - डॉ. सुरेश जैन (09826646644), पुष्पेन्द्र जैन (9826472529); ईमेल- kksmt.bhd@gmail.com

आगामी कार्यक्रम

(1) खड़ैरी (म.प्र.) में पण्डित टोडरमल शास्त्री परिषद् द्वारा चतुर्थ बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 10 से 17 मई तक किया जा रहा है। इसमें पण्डित गुलाबचंदजी बीना, डॉ. मनीषजी शास्त्री रहली, पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित विक्रांतजी पाटनी झालरापाटन, पण्डित मयंकजी शास्त्री बण्डा आदि का समागम प्राप्त होगा। सभी साधर्मीजन लाभ लेने हेतु सादर आमंत्रित हैं। **संपर्क -** 9131154652

(2) देवलाली-नासिक (महा.) में पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट में अ.भा. जैन युवा फैडरेशन झवेरी बाजार मुम्बई द्वारा दिनांक 8 से 14 मई तक 21वाँ बाल संस्कार शिविर आयोजित हो रहा है। **संपर्क -** वीनूभाई शाह (9820494461) उल्हासभाई जोबालिया (9820012132)

आत्मज्ञान ही ज्ञान है, शेष सभी अज्ञान।
आत्मशान्ति का मूल है, वीतराग-विज्ञान॥

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं निजात्मकल्याण आध्यात्मिक शिविर समिति, सूरत द्वारा आयोजित

53वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

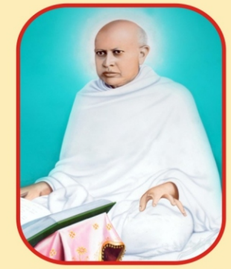

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

रविवार, दिनांक 19 मई 2019 से बुधवार, दिनांक 5 जून 2019 तक

अध्यात्मप्रेमी बन्धुवर,

आपको यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होगी कि आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित 53वाँ श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष सूरत (गुज.) में रविवार, दिनांक 19 मई 2019 से बुधवार, दिनांक 5 जून, 2019 तक अनेकानेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा नवरचित श्री अष्टपाहुड, श्री द्रव्यसंग्रह एवं श्री योगसार महामंडल विधान संपन्न होगा।

जिनधर्म प्रभावना का यह एक महान लोकोत्तर अनुष्ठान है कि जिसमें कोमलमति बालकों एवं युवाओं को जैनधर्म के मूलभूत सिद्धान्तों का ज्ञान कराया जायेगा। छात्र पाठशाला में पढाने योग्य अध्यापक बन सकें, इसलिये प्रशिक्षणार्थियों को सुयोग्य प्रशिक्षकों द्वारा प्रयोगात्मक पद्धति और मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियाँ सिखाई जायेंगी एवं इसका प्रायोगिक प्रशिक्षण भी दिया जायेगा। शिविर में विद्वानों के प्रवचनों, व्याख्यानमाला एवं प्रौढ कक्षाओं का भी आयोजन किया जायेगा।

इस अवसर पर देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी सूरत, डॉ.संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद आदि अनेक विद्वानों द्वारा प्रवचनों, प्रौढ कक्षाओं, व्याख्यानमाला, तत्त्वचर्चा आदि के माध्यम से लाभ प्राप्त होगा।

शिविर में प्रशिक्षण की अभ्यास कक्षायें पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा एवं पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई के निर्देशन में प्रशिक्षित स्नातक विद्वान लेंगे। समस्त बालकक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई के निर्देशन में होगा।

सम्पूर्ण शिविर पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होगा।

विशेष मांगलिक कार्यक्रम

रविवार, 19 मई 2019 प्रात: 8 बजे
ध्वजारोहण एवं शिविर उद्घाटन समारोह

शनिवार-रविवार, 25-26 मई 2019
अ.भा. दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् एवं
पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् द्वारा
'समाधिमरण का सच्चा स्वरूप' विषय पर विद्वत्संगोष्ठी

शनिवार, 25 मई प्रात: 10 बजे
संकल्प दिवस

मंगलवार, 4 जून 2019
प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन

बुधवार, 5 जून 2019
दीक्षान्त एवं समापन समारोह

विशेष ध्यातव्य

- शास्त्री महाविद्यालयों में प्रवेश की प्रक्रिया इसी शिविर में पूर्ण की जाती है, अत: प्रवेश इच्छुक छात्र सूरत (गुज.) अवश्य पहुँचें।

मार्ग निर्देश

पश्चिम रेलवे के दिल्ली मुम्बई मुख्य रेलवे लाईन पर सूरत जंक्शन प्रमुख स्टेशन है, यहाँ पर प्रत्येक गाड़ी रुकती है।

कार्यक्रम स्थल एवं संपर्क सूत्र

दयालजी आश्रम, मजुरा गेट,
सूरत (गुज.)
धर्मेन्द्र शास्त्री - 9724038436
अरुण शास्त्री - 9377451008
सम्यक् जैन - 9033325581

नोट : (1) बालबोध प्रशिक्षण में प्रवेश पाने के लिए बालबोध पाठमाला भाग-1,2,3 की तथा प्रवेशिका प्रशिक्षण में प्रवेश पाने के लिए वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1,2,3 की प्रवेश प्रतियोगिता लिखित परीक्षा दिनांक 19 मई को दोपहर 2.00 बजे से ली जावेगी, जिसमें प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त करना आवश्यक होगा। अत: प्रवेशार्थी उक्त पुस्तकों की पूरी तैयारी करके आएं। प्रवेशिका प्रशिक्षण में उन्हें ही प्रवेश दिया जायेगा, जो बालबोध प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। (2) सभी प्रशिक्षणार्थी एवं शिविरार्थी अपना पासपोर्ट साइज फोटो एवं परिचय-पत्र साथ में अवश्य लायें।

निवेदक

सुशीलकुमार गोदिका, अध्यक्ष
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल, महामंत्री
एवं समस्त ट्रस्टीगण पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

प्रकाशचंद छाबड़ा, अध्यक्ष
संजय दीवान, महामंत्री
विश्वास जैन, कार्याध्यक्ष
वीरेश कासलीवाल, उपाध्यक्ष
भरत मेहता, कोषाध्यक्ष
विनोद छाबड़ा, मंत्री
अमित बड़जात्या, सांस्कृतिक मंत्री

निजात्मकल्याण आध्यात्मिक शिविर समिति, सूरत

वीतराग-विज्ञान ही तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का घर-घर होय प्रसार॥

पद्यात्मक विचार बिन्दु

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

प्रस्तुत पदों में हमारे विचारों, आचरण और व्यवहार में पायी जाने वाली विसंगतियों की ओर ध्यान दिलाते हुए कुछ ऐसे विचार बिन्दु प्रस्तुत किये गये हैं, जिन पर यदि गंभीरतापूर्वक गहराई से विचार किया जाये तो न सिर्फ हमारी विचारधारा में आमूलचूल परिवर्तन होगा वरन् निश्चित ही हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। विचारशील पाठकों से अपेक्षा है कि इसका लाभ अवश्य लेंगे। अगले कुछ अंकों तक यह क्रम जारी रहेगा।

दरश का उद्देश्य निज में, जिन रूप की स्थापना,
स्थापता मैं मलिन उनमें, अपने हृदय की कल्पना।
संगती का जग जनों की, जिनदेव को उपहार यह,
बस इसलिये ही छोड़ते, आत्मार्थिजन घरबार यह।।४९।।

भगवान को ना जानकर उनका नहीं श्रद्धान कर,
आरोपता निज वृत्ति को, निज ज्ञान में भगवान पर।
यह भक्ति-पूजा है नहीं, बस राग का व्यापार है,
लोक हो या धरम तुमको, राग से ही प्यार है।।५०।।

तू चीखता तू पुकारता तू पुचकारता धिक्कारता,
भगवान को तू अरे पामर, किस दृष्टि से है निहारता।
भगवान हैं ना कोई राजा या जगत के सरकार हैं,
उनसे भोग की ही आश करना, व्यर्थ है बेकार है।।५१।।

क्या क्या सुनाता देव को तू, नाचकर अरु गा बजा,
ओ अघ मनुज तेरी सुनें, ऐसा है तेरे पास क्या।
उच्छिष्ट सम है भेंट तेरी, तीर सम उद्गार सब,
किस काम के ये मुक्तिपथ में, व्यर्थ हैं बेकार सब।।५२।।

क्या कहे उनसे निज व्यथा, सबकी है जग में ये कथा,
बस इसलिये जग त्यागकर, वे बने विरागी सर्वथा।
कुबुद्धि का परित्याग कर, सन्मार्ग का स्वीकार है,
तू भी यदि सुख चाहता, तो बस यही उपचार है।।५३।।

रे जिनालय में अवस्थित, जिनदेव का प्रतिबिम्ब जो,
है हमारा आपका भी, स्वभाव का प्रतिबिम्ब वो।
उस रूप निज को मानना, आराधना का सार है,
फिर उसी में लीन होना, यही सद्व्यवहार है।।५४।।

दौड़ता तू गिरि शिखर, किसका करे दर्शन अरे,
देख ले तू रूप अपना, शिव रमा तुझको वरे।
निज में सिमटना मोक्ष वा, यूं भटकना संसार है,
पर कौन जाने क्यों तुझे, बस भटकने से प्यार है।।५५।।

अन्य की जयकार तुझे, क्या मुक्तिपुर ले जायेगी,
तुम्ही कहो क्या दास वृत्ति, नाथ पद दिलवायेगी।
ये दासता की दीनता, मुझको नहीं स्वीकार है
मुझको तो प्रभुता चाहिये, लघुता से मुझे इनकार है।।५६।।

आत्म के उत्कर्ष हेतु, आत्मा में लीन हो,
लक्ष्य पर से फेरकर, निज में रहे तल्लीन जो।
क्यों साधकों को आपकी, आराधना स्वीकार हो,
आदर्श संत वे निर्वसन, निर्लिप्त वा अविकार जो।।५७।।

पामर बना भटका किया, भूला हुआ भगवान मैं,
मानूं स्वयं को हीन क्यों, यद्यपि गुणों की खान मैं।
यह हीनता की भावना, संसार का जड़ मूल है,
कम-अधिक खुद को मानना, भगवान तेरी भूल है।।५८।।

अस्तित्व तेरा त्रिकाल है, गुण अनन्त की खान तू,
ना तू पुजारी और पामर, तू स्वयं भगवान तू।
भगवान तू भगवान को क्यों, ऐसे अपमानित करे,
है तू स्वयं आनंद घन, यह भान सब पीड़ा हरे।।५९।।

यदि मुग्ध है तू रूप पर, अरिहंत के भगवान के,
वह रूप तो है देह का, वे अन्य हैं इससे अरे।
आराधना बस रूप की, यह काय का व्यापार है,
अदृश्य है अस्पर्श है, ना रूप ना आकार है।।६०।।

(क्रमशः)

सुवर्ण अवसर ।। श्री वीतरागाय नम:।। सुवर्ण अवसर

ज्ञान समान न आन जगत में सुख को कारण। इहि परमामृत जन्म-जरा-मृत रोग निवारण।।
तातैं जिनवर कथित तत्त्व अभ्यास करिजे। संशय-विभ्रम-मोह त्याग, आपौ लख लीजे।।

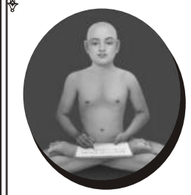

श्री गजपंथ फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा संचालित

श्री देशभूषण कुलभूषण छात्रावास

शुभारंभ शैक्षणिक सत्र 2019-20 से

सप्त बलभद्र और आठ करोड मुनिराजों के निर्वाण से पावन हुए गजपंथ सिद्धक्षेत्र के पवित्र परिसर में, आध्यात्मिक सत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के पुण्यप्रभावना योग से बा.ब्र. श्री धन्यकुमारजी बेलोकर के कुशल नेतृत्व में पर्वत की तलहटी में स्थित गजपंथ सिद्धक्षेत्र पर श्री देशभूषण कुलभूषण छात्रावास का शुभारंभ आगामी शैक्षणिक सत्र (सन् 2019-20) में होने जा रहा है।

छात्रावास की विशेषताएँ

शहर के प्रदूषण से दूर, प्राकृतिक स्वच्छ व शुद्ध वातावरण ❊ सर्व सुविधाओं से युक्त निवास व्यवस्था ❊ दूध-नाश्ता, सात्विक भोजन ❊मनोरंजन व उत्तम स्वास्थ्य के लिए कसरत-योग व खेल सामग्री ❊ बौद्धिक विकास के संगणक कक्ष (कम्प्यूटर लैब), ग्रंथालय ❊ व्यक्तिगत विकास तथा नेतृत्व विकास प्रशिक्षण ❊ प्रत्येक विद्यार्थी के लिए स्वतंत्र टेबल-कुर्सी, अलमारी, बेड तथा चार-पाँच छात्रों के लिए एक रूम।

लौकिक शिक्षा

नाशिक के नामवंत सी.डी.ओ. मेरी स्कूल में प्रवेश, सेमी इंग्लीश मीडियम, टेक्निकल, स्काऊट, एन.सी.सी., भव्य कम्प्यूटर लैब, ग्रंथालय, सुसज्ज विज्ञान प्रयोगशाला, प्रत्येक कक्षा के 9-9 सेक्शन, 10 वीं का परिक्षा परिणाम 100%, विज्ञान प्रदर्शनी तथा क्रीडा क्षेत्र में उत्कृष्ट सफलता, उत्कृष्ट प्रशासन-अनुशासनयुक्त विद्यालय।

धार्मिक संस्कार

प्रतिदिन पूजा-भक्ती एवं स्वाध्याय द्वारा धार्मिक संस्कार ❊ रविवार को प्रक्षाल व सांस्कृतिक शिक्षाप्रद कार्यक्रम ❊ बालबोध पाठमाला, वीतराग-विज्ञान पाठमाला, द्रव्यसंग्रह, रत्नकरंड श्रावकाचार, तत्त्वार्थसूत्र आदि ग्रंथों का अध्ययन।

प्रवेश प्रक्रिया

कक्षा 8 वीं में प्रवेश हेतु आवेदन मँगाए जा रहे हैं। इस सत्र से कक्षा 8 वीं में मात्र 20 प्रवेश परीक्षा एवं साक्षात्कार द्वारा तय किए जाएँगे। इसके लिए दिनांक 4-5 मई 2019 को गजपंथ सिद्धक्षेत्र नाशिक पर आयोजित शिविर में प्रवेश किए जाएँगे। अपने बालक का फार्म व कक्षा 5, 6 एवं 7 वीं अंकसूची के साथ निम्न पते पर दिनांक 31 मार्च 2019 तक भेजें। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

श्री बंडोपंत सोनटक्के, मो. 9011036304, पंडित शुभम शास्त्री, मो. 8502827908, फोन नं. 0253-2531304, 2234502

छात्रावास की सभी सुविधाएँ पूर्णत: नि:शुल्क हैं।
मात्र विद्यालय में आवागमन तथा विद्यालय का नाममात्र शुल्क पालकों से लिया जाएगा।
आर्थिक दृष्टि से कमजोर, जरूरतमंद मेधावी विद्यार्थियों को इस शुल्क में भी छात्रवृत्ति के रूप छूट दी जाएगी।

पत्र व्यवहार का पता
बा.ब्र. पंडित धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथ फाऊण्डेशन, कुंदकुंद भवन, प्रभात नगर, म्हसरुळ, नाशिक-422004

-: गृहपति एवं विद्वान की आवश्यकता :-

उपरोक्त छात्रावास के लिये गृहपति (वार्डन) एवं विद्वान की आवश्यकता है। शैक्षणिक पात्रता कम से कम ग्रेज्यूएट होवें। जैनदर्शन शास्त्री को प्रधानता दी जायेगी। इच्छुक प्रत्याशी अपना पता, मोबाइल नं. व कार्यानुभव के साथ Resume (परिचय) ईमेल से भेजें।

संपर्क :- श्री सुमेरचंदजी बेलोकर (9969039285, 8291064898), श्री बंडोपंतजी सोनटक्के (9011036304),
फोन नं. 0253-2531304, 2234502; E-mail : sidd.gajpanth@gmail.com

सर्व प्राचीना सनातनी गुरुकुल परम्परा सर्वदा सुखदा वरदा वर्तते। साधुवादार्हा अनुष्ठेयं सद्परम्परा।

2 अप्रैल 2019, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी की साधना भूमि सुवर्णपुरी सोनगढ़ की पावन धरा पर अद्वितीय दर्शनीय केन्द्र

गुरू कहान कला संग्रहालय

- देश के ख्याति प्राप्त चित्रकारों तथा शिल्पकारों द्वारा जैन सिद्धांतों के आधार पर निर्मित अनुपम चित्र एवं शिल्प
- आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा रचित जैन शासन के महान ग्रन्थ समयसार में वर्णित गाथाओं एवं आचार्य अमृतचंद्र सूरि द्वारा प्रणीत आत्मख्याति टीका में समागत दृष्टान्तों और सिद्धांतों का प्रभावशाली कलात्मक प्रयोग
- बारह भावना, दश धर्म, भक्तामर स्तोत्र, भरतेश वैभव आदि अनेक विषयों पर आधारित अनेक चित्रपट एवं पाषाण शिल्प
- जिनागम के अनेक सिद्धांतों के रहस्यों को चित्रों द्वारा जीवंत अभिव्यक्ति समझाने का अद्भुत प्रयास
- अध्यात्म युगस्रष्टा पूज्य गुरुदेवश्री एवं स्वानुभव विभूषित बेनश्री के जीवन के विभिन्न आयामों का दिग्दर्शन और उनके द्वारा उद्घाटित जिनवाणी के संदेशों पर आधारित सुंदर चित्र एवं शिल्प
- प्रत्येक तीसरे माह में अथवा विशेष प्रसंग पर नई परिकल्पना पर आधारित परिवर्तन
- संग्रहालय में प्रदर्शित चित्रों एवं शिल्पों की भावानुभूति कराने के लिये कुशल विद्वान की सेवा उपलब्ध
- किशोर एवं युवा वर्ग के लिये आधुनिक भाषा में जैन सिद्धांतों को प्रदर्शित करता एक बेमिसाल केन्द्र

एक अलौकिक मंगल अनुभूति के लिये.... अवश्य पधारिये।

गुरु कहान कला संग्रहालय श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर संकुल, तीर्थधाम सोनगढ़, जिला - भावनगर (सौराष्ट्र) गुजरात मोबा. 8209571103

www.gurukahanmuseum.org : info@gurukahanmuseum.org www.facebook.com/gurukahanmuseum

निवेदक - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुम्बई-56 022-26130820, 26104912

आचार विचार संस्कार

ARHAM PATHSHALA

महावीर के संदेशों को घर-घर तक पहुँचायेंगे

अर्हं पाठशाला

पण्डित टोडरमल मुक्त विद्यापीठ जयपुर द्वारा संचालित

अब ऑनलाईन
जैन पाठशाला
घर-घर तक
जन-जन तक

त्रैमासिक पाठ्यक्रम

सभी आयु वर्ग के लिए

सीमित स्थान

आप सीखेंगे

- जैनधर्म के मूलभूत सिद्धांतों को
- जैन सिद्धांतों का प्रायोगिक ज्ञान
- जीवन जीने की कला
- महापुरूषों का जीवन चरित्र
- नैतिकता
- सदाचरण
- चरित्र-निर्माण
- तनाव मुक्त जीवन

मुख्य आकर्षण

- विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा कक्षाऐं
- पॉवर पाईन्ट प्रेजेन्टेशन
- जूम एप द्वारा ऑनलाईन लाइव वीडियो कक्षाऐं
- 6 भाषाओं में कक्षाऐं (हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, कन्नड़, तमिल)
- विश्व भर में कक्षाओं का संचालन
- समस्या समाधान सत्र
- प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक सभी जैन पाठ्यक्रम उपलब्ध

प्रवेश शुल्क 300/- मात्र

सम्पर्क करें :- मोबाइल-8058890377

DIRECTOR

एस. पी. भारिल्ल विश्व प्रसिद्ध वक्ता

डॉ. संजीव गोधा विश्व प्रसिद्ध जैन विद्वान

Chief Executive	Co-ordinator	In-charge	Executive
प्रतीति पाटील	आकाश शास्त्री	जिनेन्द्र शास्त्री	अर्पित शास्त्री

E-learning of Mokshmarg

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

प्रकाशन तिथि : 28 मार्च 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com